1

दिव्यांगों की दुनिया में रोशनी बिखेर रहे जन्मांध दिलीप

हौसले से कामयाबी

गया जिले के बोधगया में रहनेवाले दिलीप कुमार बिना आंख के एक ऐसे ही शख्स हैं, जिन्हें नजदीक से देखने-जाननेवाला हर व्यक्ति अपने लिए प्रेरणास्रोत मानता है. इनका कामकाज आचार-विचार, आचरण व जीने के तौर-तरीके आंखवालों की तुलना में सर्वथा अलग और अनुकरणीय हैं.

कलेंद्र प्रताप ▸ बोधगया (गया)

> हौसले व अपने दम पर दिलीप ने समाज को नयी सीख व दिशा दी

रोजमर्रा की जिंदगी में बहुधा लोग कहते सुने जाते हैं कि अमुक आदमी तो आंख रहते अंधा है या फलां आंखवाला भी अंधा ही है. दरअसल, ऐसी कटूक्तियां लोग आमतौर पर तब सुनाते हैं, जब किसी व्यक्ति से लापरवाही या अनदेखी की शिकायतें होती हैं. पर, इन आंखवाले अंधों के बीच ऐसे बिना आंखवाले लोग भी हैं, जिनके कामकाज, आचार-आचरण व जीने के तौर-तरीके आंखवालों की तुलना में सर्वथा अलग और अनुकरणीय हैं. बिहार के गया जिले के बोधगया में रहनेवाले दिलीप कुमार बिना आंख के ऐसे ही एक शख्स हैं, जिन्हें नजदीक से देखने-जाननेवाला हर व्यक्ति अपने लिए प्रेरणास्रोत मानता है. और इसकी वजह कर्मठता, ईमानदारी, दूसरों की भलाई के लिए निरंतर प्रयासरत रहने जैसे उनके वे गुण हैं, जिनकी कमी की चर्चा आज सर्वत्र सुनी जाती है.

सैकड़ों चेहरे पर मुस्कान पैदा करने की क्षमता रखनेवाले दिलीप कुमार का जब एक जनवरी, 1970 को जन्म हुआ, तो कई लोग निराश-हताश थे. परिजनों के सामने एक नयी चुनौती थी. क्योंकि, नवजात दिलीप कुमार के साथ बाकी तो सब ठीक था, पर उनकी आंखें नहीं थीं. वह जन्मांध निकले. सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि ऐसे शिशु को देख कर माता-पिता की कैसी हालत होती होगी और इनके पालन-पोषण की कैसी चुनौती सामने दिखती होगी. खैर, जो होना था, हो चुका था. एक जन्मांध के रूप में दिलीप कुमार की जिंदगी की गाड़ी रेंगने लगी. कुछ बड़ा होने पर घरवालों ने उन्हें पढ़ने के लिए पटना नेत्रहीन विद्यालय में भेजा.

वहीं से 1988 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की. 1995 में दिल्ली के जाकिर हुसैन कॉलेज से स्नातक भी कर लिया. पढ़ाई-लिखाई यहां तक करने के बाद नौकरी के अवसर भी आने लगे. कई बार सरकारी नौकरी के अवसर मिले भी. पर, एक खास समझ ने सरकारी नौकरी में जाने से बार-बार रोक दिया. वह यह कि अगर सरकारी नौकरी में चले गये, तो जिंदगी कहीं स्वकेंद्रित हो जा सकती है. फिर दूसरे लोगों के लिए कुछ करने का स्कोप खत्म हो जायेगा. कम से कम घट तो जायेगा ही. दरअसल, दिलीप कुमार को विकलांगता के दंश का अच्छी तरह एहसास हो गया था. उन्हें अपनी तरह के नेत्रहीन लोगों की दिक्कतों व चुनौतियों की अच्छी समझ हो गयी थी.

ऐसे में उन्होंने ऐसा कुछ करने का फैसला किया, जिससे नेत्रहीन या दूसरी वजहों से विकलांग हो चुके लोगों की जिंदगी में बदलाव लाने का अवसर मिले. इसी समझ के साथ उन्होंने बुद्धा विकलांग विकास संस्थान नामक एक संस्था की नींव रखी, जिसने आगे चल कर ब्लाइंड स्कूल चलाया, बालश्रमिकों के लिए स्कूल चलाया, विकलांगों के लिए तरह-तरह के जागरूकता अभियान चलाया. आज भी ऐसे अभियान चल रहे हैं. फिलहाल श्री कुमार विकलांगों के लिए रेलवे पास की जगह जारी होनेवाले स्मार्ट कार्ड की सुविधा लोगों तक पहुंच सके, इसके लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहे हैं. अफसरों के दफ्तरों के चक्कर काट रहे हैं, ताकि दूसरे विकलांगों को ऐसे ही चक्कर न काटने पड़ें. इनके प्रयास से कई दिव्यांगों में आत्मविश्वास भी बढ़ा है.

हिम्मत व संकल्प से नयी राह पर चलने का लिया संकल्प, कमजोर लोगों के लिए राह आसान करने के रास्ते पर चल पड़े

जब सब सुखी होंगे, तो मैं भी दुखी नहीं रहूंगा

दिलीप कुमार के जीवन के सिद्धांत ढेर सारे दूसरे लोगों से थोड़े अलग हैं. वह लोकहित के लिए कुछ भी करने को सर्वदा तैयार रहने की बात करते हैं. कहते हैं कि हर वक्त व्यक्ति ऐसा कुछ करने की बात सोचनी चाहिए, जिससे दूसरों का भला हो. वह कहते हैं कि जब पास-पड़ोस के लोग स्वस्थ, संतुष्ट व सुखी रहेंगे, तो मैं भला क्यों दुखी रहूंगा. मेरे दुखी होने की कोई वजह ही नहीं हो सकती. इसलिए हरदम वह दूसरों के भले के लिए अपना कंधा प्रस्तुत करने को तैयार रहते हैं. इनके इस प्रयास से दिव्यांगों की जिंदगी बदल गयी है.

जन्मांध दिलीप कुमार द्वारा खड़ी की गयी संस्था का मुख्य कार्यस्थल.

दिव्यांगों के लिए चलाया आंदोलन, गये जेल भी

दिलीप कुमार कोई ऐसे-वैसे शख्स नहीं हैं. धुन के पक्के आदमी हैं. कुछ करने के लिए जिद पर उतरते हैं, तो भयानक नतीजों की भी परवाह नहीं करते. इसका उदाहरण है उनके पास. दरअसल, वह पढ़ने-लिखने के दौर में ही विकलांगों की समस्याओं पर मुखर रहने लगे थे. दिव्यांगों की बातें हर स्तर पर उठा कर उनके जीवनस्तर में सुधार की वकालत करते थे. ऐसे ही मसलों पर दो-दो बार उनका आंदोलन आमरण अनशन का रुख अख्तियार कर लिया. नतीजतन पुलिस व प्रशासन ने उनसे निबटने के लिए उन्हें जेल ही भेज दिया. श्री कुमार विकलांगों के हित में अपने आंदोलन के चलते दो जेल यात्राएं भी कर चुके हैं.

हर ट्रेन में मिले विकलांगों को यात्रा की सुविधा

दिलीप कुमार कहते हैं कि भारत में आवागमन के लिए सबसे बड़े साधन के रूप में रेलवे को ही देखा जाता है. पहले रेलवे अपनी ट्रेनों में विकलांग यात्रियों के लिए बोगियां देती थी. इससे काफी सुविधा होती थी. विकलांग लोग आसानी से चुनौतीपूर्ण भीड़ से बचते हुए यात्रा कर सकते थे. पर, हाल में इस सुविधा में कटौती हुई है व आगे और भी कटौती के संकेत मिल रहे हैं. उनके मुताबिक, महाबोधि एक्सप्रेस व पुरुषोत्तम एक्सप्रेस जैसी जिन ट्रेनों के कोच लाल रंग के हो चुके हैं, उनमें अब विकलांगों के लिए कोई आरक्षित जगह नहीं होती. श्री कुमार इसे ठीक नहीं मानते.

महिलाओं के लिए भी चला रहे प्रशिक्षण केंद्र

दिलीप कुमार बोधगया और आसपास की बेरोजगार महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, बुनाई आदि का प्रशिक्षण भी दिलवा रहे हैं, ताकि ये स्वावलंबी बन सकें और दूसरों पर इनकी आर्थिक निर्भरता घट सके. गया जिले के ग्रामीण अंचलों में ऐसे प्रशिक्षण केंद्र चल रहे हैं, जहां करीब 200 महिलाएं ट्रेनिंग पा रही हैं. इतना ही नहीं, उनकी संस्था इन दिनों महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार हेतु महिला व बाल विकास मंत्रालय को रिपोर्ट भेजने के लिए 18 से 35 वर्ष तक की आयु की महिलाओं के बीच एक सर्वेक्षण करा रही है. जल्दी ही यह रिपोर्ट मंत्रालय को भेजी जायेगी. उन्हें उम्मीद है कि इस काम के परिणामस्वरूप ढेर सारी गरीब-बेरोजगार महिलाओं की जिंदगी में खुशहाली आ सकेगी. बोधगया और इसके आसपास के इलाकों की महिलाएं दिलीप की मदद से अपने पैरों पर खड़ी हो गयी हैं और अपना काम कर रही हैं. इनकी दिखायी राह पर चल कर महिलाओं में आत्मबल भी आया हैऔर वे अपने परिवार में मुखिया के रूप में उभरी हैं. इससे उनकी जिंदगी खुशहाल हुई है.

जज्बा | 18 नेत्रहीन छात्राएं हैं कस्तूरबा विद्यालय में — 2

मन की रोशनी से अंधेरा दूर करने की राह पर छात्राएं

परसा में बने कस्तूरबा विद्यालय का भवन.

अमित कुमार/दीपक कुमार ▸ दिघवारा/परसा (सारण)

आंखों में रोशनी नहीं तो क्या हुआ, तालीम से तकदीर बदलेंगे. हौसले से हरायेंगे हर मुसीबत को और कभी भी उम्मीद का दीपक बुझने नहीं देंगे. यह जज्बा व जुनून है. परसा प्रखंड के कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में पढ़ रही 18 नेत्रहीन लड़कियों का. प्रखंड के अन्याय पंचायत अधीन विशुनपुर गांव में अवस्थित इस विद्यालय में जिले के कई प्रखंडों की नेत्रहीन लड़कियां नामांकित है, जो ब्रेल लिपि के सहारे पढ़ाई कर अपनी किस्मत को संवारने में जुटी है.

कक्षा छह से आठ तक की पढ़ाई की है व्यवस्था : कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, विशुनपुर में नेत्रहीन लड़कियों की पढ़ाई की उत्तम व्यवस्था है और यह संभवतः नेत्रहीन लड़कियों की पढ़ाई के लिए जिले का इकलौता सरकारी संस्थान है. यहां वर्ग छह से आठ तक की पढ़ाई की व्यवस्था है. 25 सीटवाले स्कूल में 18 नेत्रहीन छात्राएं हैं.

ब्रेल लिपि के सहारे ले रही हैं शिक्षा : इस विद्यालय में जिले के कई प्रखंडों की नेत्रहीन लड़कियां नामांकित हैं. सोनपुर, दिघवारा, दरियापुर, मकेर, मढ़ौरा, तरैया, रिविलगंज, एकमा, मांझी, छपरा व गड़खा आदि प्रखंडों की नेत्रहीन लड़कियां ब्रेल लिपि के सहारे विभिन्न विषयों की पढ़ाई करती हैं.

सामान्य वर्गों की तरह ही होता है सिलेबस : सरकारी विद्यालयों में वर्ग छह से आठ तक का जो सिलेबस होता है. वही सिलेबस इन लड़कियां के लिए भी है. बस इन लड़कियों को पढ़ाने में ब्रेल लिपि का इस्तेमाल होता है. इस तरह की पढ़ाई में एक विशेष तरीके का प्रयोग होता है और ब्रेल पेपर, टेलर फ्रेम, स्टाइलस कलम, ब्रेली स्लेट व गाइड के सहारे गणित, विज्ञान, अंगरेजी, सामाजिक विज्ञान, हिंदी आदि विषयों की पढ़ाई पूरी करवायी जाती है. ब्रेल पेपर पर अंकित डॉट्स के सहारे अक्षरों को पहचाना जाता है फिर इन्हीं चिन्हों से शब्दों का निर्माण होता है.

सामान्य छात्राओं की तरह निबटाती हैं दैनिक काम : जब आप इन लड़कियों को अपना दैनिक कार्य पूरा करते देखेंगे तो आपको बिजली की फुर्ती की तरह काम करने वाली इन लड़कियों को देखने से कहीं से भी नहीं लगेगा कि वे सभी नेत्रहीन हैं. लड़कियां कपड़ा धोना व सुखाना, किचेन से खाना लेना आदि कामों को बिना किसी की मदद से पूरा करती है.

नौकरी करना चाहती हूं

भगवान ने आंखों की रोशनी छीन ली, फिर भी मेरा हौसला नहीं डिगा.मैं पढ़ लिखकर एक नौकरी पाना चाहती हूं, ताकि प्रतिष्ठा के साथ जीवन जी सकूं.

सरिता कुमारी, छात्रा, छत्तर छपरा, दिघवारा

शिक्षा के बिना सब बेकार

आंखों में रोशनी के बिना जीवन कष्टमय हो जाता है और उस जीवन में भी शिक्षा न हो तो जीवन ही बेकार है. मैं ईमानदारी के साथ पढ़ कर अपने माता-पिता का नाम रौशन करना चाहती हूं.

अंजली कुमारी, छात्रा, रामपुर रूद्र, तरैया

आत्मनिर्भर बनाने का कर रहे प्रयास

विद्यालय में नामांकित लड़कियों को हर तरह की सुविधाएं दी जाती है और पढ़ाई के साथ नेत्रहीनता से लड़ने का हुनर सिखाया जाता है. उनलोगों को आत्मनिर्भर बनाने की हर संभव कोशिश की जाती है.

नूतन सिंह यादव, संसाधन शिक्षिका

कुरीतियों से लड़ने का अलख जगा रही युवाओं की टोली

3 — गांवों में सभा कर महादलितों को जागरूक कर रही है युवाओं की टोली

दीपक राव ▸ भागलपुर

सरकार की ओर से आरक्षण मिलने के बाद भी महादलितों में एक ऐसा समाज है, जो आज भी अपने को स्थापित करने को संघर्ष कर रहा है. संघ बनाकर अखिलेश मल्लिक एवं प्रकाश मल्लिक ने समाज के बीच एकजुटता बनाने का काम शुरू किया है. इतना ही नहीं समाज की कुरीतियों को दूर कर रहे हैं. सफाई का कार्य करने वाले महादलित समाज के लोगों की मानें तो समाज के अधिकतर लोगों में शिक्षा का अभाव है. शिक्षा के अभाव होने से कुरीतियां हावी है. हरेक जगह नकारा साबित होने पर खुद को आगे बढ़ाना संभव नहीं है. आठवीं पास अखिलेश मल्लिक एवं प्रकाश मल्लिक ने इसके लिए संगठन बनाया और समाज के लोगों को एकजुट करना शुरू किया.

संगठन में हैं 15 सक्रिय सदस्य : एकजुट होकर एक संगठन बनायें. संघ में 15 सक्रिय सदस्य हैं. जो माह में एक बार जरूर बैठक करते हैं. जब समाज के लोगों को किसी प्रकार की समस्या होती है, तो सभा बुला कर उनकी समस्या का समाधान किया जाता है.

ग्रामीणों के मन में बैठे अंधविश्वास को दूर कर ज्ञान की ज्योति जलाने का संकल्प

गांव में सभा कर लोगों को कुरीतियों से लड़ने का पाठ पढ़ाते युवा.

इन समस्याओं का किया जाता है निराकरण

इसमें भूत-प्रेत की समस्या से लेकर शराब से मुक्ति, पारिवारिक विवाद, बच्चों को स्कूल भेजने आदि पर चर्चा होती है. संघ की सभा में बुलाकर आधुनिक तरीके से समस्याओं को हल करने और भूत-प्रेत जैसे अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया जाता है. इसके अलावा समाज के किसी भी लोगों के बीच आर्थिक तंगी की शिकायत मिलती है, तो संगठन स्तर पर उन्हें मदद कर उबारा जाता है. साथ ही विवाद व झगड़ा नहीं करने की नसीहत दी जाती है.

भागलपुर के विभिन्न क्षेत्रों में लगती है सभा

भागलपुर के जेल रोड के किनारे सभा होती है. इसमें समस्याओं का हल होता है. इसके लिए तिलकामांझी विक्रमशिला कॉलोनी स्थित राजकीय पीटी मध्य विद्यालय के सामने कार्यालय खोला गया है. यहां पर महादलित समाज के लोग अपनी-अपनी समस्या बताते हैं. इसके अलावा जरलाही में सभा होती, कभी हवाई अड्डा में, तो कभी विक्रमशिला कॉलोनी व तिलकामांझी में सभा होती है.

शिवलगन से मिली प्रेरणा

इसके लिए उन्हें समाज के ही पीडब्ल्यूडी विभाग में क्लर्क से रिटायर हुए शिवलगन मल्लिक से प्रेरणा मिली. अखिलेश बताते हैं कि इसी क्रम में बेगुसराय में संगठन का काम देखा और समाज में जागरूकता. इसके बाद ही यहां पर संघ बना कर समाज की कुरीतियों को दूर करना शुरू किया. प्रकाश मल्लिक ने बताया कि हमलोगों को देखनेवाला कोई नहीं है. सभी सफाई का काम करते हैं. सरकार की ओर से आरक्षण के बाद भी शिक्षा का अभाव सबसे बड़ा रोड़ा है. जब तक जागरूकता नहीं आयेगी, तब तक समाज से अंधेरा को दूर नहीं किया जा सकता. उन्होंने बताया कि प्रकाश खगड़िया नया गांव का रहनेवाला है और अखिलेश साहू परबत्ता का. दोनों जेल में सफाईकर्मी है. दोनों ने आठवीं तक ही पढ़ाई की. आगे नहीं पढ़ने के कारण कोई अच्छी नौकरी नहीं मिली. अब नहीं चाहते कि समाज के लोग अशिक्षित रहकर केवल कूड़ा-करकट उठाते रहें. दोनों भागलपुर में ही रहकर अपनी जीविका चलाते हुए अपने समाज के बीच जागरूकता कार्यक्रम चला रहे हैं.

---

4 — **जुनून** | नि:शुल्क शिक्षा दे नौवीं तक के छात्रों को बना रहे काबिल

खुद नेत्रहीन, पर जला रहे शिक्षा की ज्योति

अवधेश कुमार राजन ▸ गोपालगंज

दिव्य ज्ञान से दोनों आंखों से नेत्रहीन सकलदीप गरीब छात्रों के बीच शिक्षा की ज्योति जला रहे है. उनके जीवन का उद्देश्य सिर्फ शिक्षा के जरिये समाज को बदलने की है. इसके लिए दिन रात वे मेहनत करते है. गरीब बच्चों को निःशुल्क कोचिंग की शिक्षा देते है. वर्ग एक से लेकर नौ तक के बच्चों को मैथ, इंगलिस तथा हिंदी के अलावा भूगोल के सिलेबस की तैयारी कराते है. सिलेबस के अलावे अपने छात्रों को समाज में काबिल बनने की शिक्षा देते है. सुबह पांच बजे से आठ बजे तक तथा शाम चार बजे से रात के दस बजे तक सकलदीप के दरवाजे पर सैकड़ों की संख्या में छात्रों की भीड़ रहती है. आज उन्हें अपने नेत्र नहीं होने का कोई मलाल नहीं है. लेकिन मलाल इस बात की है कि वे मैट्रिक की परीक्षा नहीं दे सके. उन्होंने आज जीवन की झंझावतों को पार करते हुए समाज में एक अलग स्थान स्थापित किया है. इलाके के लोग उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते है. इनके पढ़ाये शिष्य आज दुनियां में अपना परचम लहरा रहे है.

मां दुर्गा की रच डाली स्तुति : सकलदीप सुबह चार बजे जगने के साथ ही नहा-धो कर मां के दरबार में जाकर शीष नवाते हैं. नवरात्र के मौके पर मां की स्तुति का रचना कर डाली है, जिसका कलेंडर के रूप में एक शिष्य ने प्रकाशित करा कर शहर के प्रमुख स्टॉलों पर भी उपलब्ध कराया है. मां पर लिखी गयी स्तुति काफी उच्च कोटि की है.

खाली समय में लिखते हैं कविता : स्कूल के पीरियड में सकलदीप खाली रहते हैं. इस खाली समय में अपने दिव्य ज्ञान से कविता की रचना करते हैं. द्विअर्थी, देशभक्ति, व्यंग और उद्देश्य परख लगभग 120 कविता की रचना कर चुके हैं. अब उसे प्रकाशित करने की तैयारी चल रही है.

गरीबी से हारी नहीं, मेहनत से पाया मुकाम

संवाददाता ▸ बेगूसराय/छौड़ाही

5

दृढ़ इच्छाशक्ति, लगन, कठिन परिश्रम और मन में सफल होने के मजबूत इरादों के साथ हमेशा कुछ करने की तमन्ना ने आखिरकार सपनों को पंख लगा ही दिया. खोदाबंदपुर प्रखंड की बरियारपुर पश्चिमी पंचायत के सदर बाजार की रहने वाली कुमारी रेशमी चौधरी ने मेडिकल की परीक्षा में सफलता प्राप्त कर दिया कि जब्बे के आगे गरीबी हार गयी. गांव के एक साधारण परिवार ललन प्रसाद चौधरी के घर की रेशमी ने सफलता प्राप्त कर परिवार सहित क्षेत्र का नाम रोशन किया है. बचपन से ही पढ़ने में मेधावी रेशमी ने प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा गांव के ही विद्यालयों से प्रारंभ की. मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद परिवारवालों के सहयोग से इंटरमीडिएट की शिक्षा प्राप्त करने के लिए झारखंड की राजधानी रांची चली गयी.

जहां उसने साथ-साथ मेडिकल की तैयारी भी शुरू कर दी. इसी वर्ष संपन्न हुए मेडिकल की परीक्षा में शामिल हुई और प्रथम प्रयास में ही सफलता हासिल करने में कामयाब रही. मेडिकल की प्रवेश में राष्ट्रीय स्तर पर 7142 और बिहार में 383 वां रैंक प्राप्त की. रेशमी को इंदिरा गांधी आर्युविज्ञान संस्थान सह मेडिकल कॉलेज पटना में दाखिला मिल गया. रेशमी अपनी सफलता का श्रेय माता, पिता व गुरुजनों को दिया है. गरीब परिवार में जन्मी छात्रा ने अपने हौसले वह कर दिखाया, जो संपन्न घर के नहीं करते.

6

खेती को बनाया कैरियर, मेहनत से बनायी पहचान

नयी राह

हैदर सरकारी नौकरी करना चाहते थे, लेकिन मां ने खेती में कैरियर बनाने की सलाह दी. उन्हें यह बात अच्छी लगी. इसके बाद कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा. आधुनिक तरीका अपनाया और खेती में सफल हुए. आज वे आस-पास के किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बन गये हैं.

संतोष कुमार गुप्ता ▸ मीनापुर (मुजफ्फरपुर)

मुजफ्फरपुर जिले के मीनापुर प्रखंड के मोथहां माल गांव के मो हैदर अंसारी रेलवे की नौकरी करना चाहते थे. डीजल मैकेनिक का कोर्स भी किया. एकाएक मां का मन बदला और बेटे को कह दिया. सरकारी नौकरी के चक्कर में क्यों पड़े हो. खेती करो. इसमें भी कैरियर है. फिर, हैदर ने पीछे मुड़कर नहीं देखा. परंपरागत खेती छोड़ वैज्ञानिक तरीके से खेती शुरू की. उन्होंने धान, गेहूं और मक्का को छोड़ केला, कटहल, महोगनी और पोपलर की अब खेती की. खेती से आमदनी अच्छी हुई. हैदर तीन लाख रुपये खर्च कर सात लाख से अधिक हर साल कमा रहे हैं.

अब तो हैदर का नौ एकड़ जमीन भी खेती के लिए कम पड़ गया है. फिर उन्होंने पांच एकड़ जमीन लीज पर ली. हैदर ने मोथहां माल गांव को हरित क्रांति के क्षेत्र में एक अलग पहचान दी है. नयी खेती का वह बादशाह बन गया है. अत्याधुनिक पद्धति से खेती कर वह कृषि क्रांति को आगे बढ़ा रहा है.

बाग में लगा है सिंगापुरी केला : मोथहां माल गांव में घुसते ही आपको दूर से ही हरियाली की खुशबू नजर आने लगेगी. यहां टिश्यू कल्चर विधि से सिंगापुरी केले की खेती की हुई है. मो हैदर खुद हंसिया व खुरपी के साथ खेत में काम करते मिल जायेंगे. मो हैदर ने पॉपुलर का 2200 पौधा, कटहल का 400 पेड़, महोगनी 300 पेड़, अर्जुन 100 पेड़ लगाकर पर्यावरण को हरा भरा रखने का संकल्प लिया है. साथ ही बागवानी मिशन से पौधे लेकर टिश्यू कल्चर केले की खेती की है. 1200 टिश्यू कल्चर के पौधों में से नौ सौ में से केले का फूल निकलना शुरू हो गया है. शीघ्र ही सिंगापुरी जैसा स्वादिष्ट केला खाने को मिलेगा.

खर्च तीन लाख, कमाई सात लाख से अधिक : हैदर के पिता मो जैनुल अंसारी व मां कुलसुम बेगम अब इस दुनिया में नहीं है. किंतु हैदर अपना खेती का गुरु मां को ही बताता है. खेती से हैदर की किस्मत पलट गयी है. साल भर में तीन लाख रुपये वह खेती पर खर्च करता है. किंतु सात लाख से अधिक मुनाफा होता है. घर की माली हालत सुधर गयी है. सिंचाई के लिए दो ट्रेक्टर, पंपिंग सेट, जेनेरेटर व अन्य यंत्र खरीद ली है. दरवाजे पर दुधारू गाय के लिए पशु चारा की भी किल्लत नहीं है. घर पर आटा चक्की मशीन भी लगायी है. बेटी नुसरत जहां, नगमा नाज व पुत्र रौशन अली सेंट्रल स्कूल में पढ़ता है. वह दस साल से खेती करता है. हैदर खेती के लिए ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट लखनऊ व डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूषा से प्रशिक्षण ले चुका है. वह किसान कॉल सेंटर से हमेशा परामर्श लेता है.

खेती से हर साल लाखों की आमदनी कर रहे हैं हैदर आस-पास के किसानों के लिए बने आइकॉन

बड़ी जतन से बचा रहे धान के बेशकीमती नस्ल

धान के बेशकीमती प्रभेद को बचाने के लिए मो हैदर को मशक्कत करनी पड़ी. सुखाड़ से जहां सभी जगह फसल सूख रहे थे. वहीं, हैदर का धान भीषण गरमी व सूखे में भी लहलहा रहा था. इसके लिए उसे पांच दिन पर निजी पंपिंग सेट से पटवन करना पड़ा. उन्होंने पैडी सिस्टम से छह कट्ठा में धान का पौधा लगाया है. हैदर ने पोपुलर की नर्सरी लगायी है. बागबानी मिशन के तहत लगाये नर्सरी में दस हजार पौधे तैयार हैं. यह पौधे जिले के किसानों के बीच बांटे जायेंगे. इतना ही नहीं वे इसकी लगातार देखभाल भी करते हैं.

एक खेत में कई फसल लगा कर हैदर ने मिसाल पेश की.

लहलहा रहा है बाजरा और सोयाबीन

हैदर ने नौ एकड़ में धान की फसल लगायी है. इसमें राजेंद्र भगवती, शंकर, बासमती व कतरनी प्रजाति का धान भी है. धान में बाली फूट पड़े है. उन्नत व दुर्लभ किस्म के धान के लिए मो हैदर काफी मेहनत कर रहे हैं. साथ ही, एक एकड़ में बाजरा व 12 कट्ठा में सोयाबीन की फसल काफी बेहतर है.

एक ही खेत में कई फसल लगाते हैं हैदर

हैदर के नौ एकड़ में धान की हरियाली को देख आप चौक जायेंगे. बीच में उन्होंने टिश्यू कल्चर केले की खेती की है. इसके बाद धान के खेतों के मेड़ के चारों ओर किनारे कटहल व पोपुलर के पेड़ लगाये है. पॉपुलर का पेड़ पांच साल में तैयार होगा. जबकि कटहल का विशालकाय पेड़ होने में बीस साल लग जायेगा. हैदर बताते है कि मेड़ अब खाली भी नहीं रहता. सभी फसलों को सपोर्ट भी हो जाते. खेतों की उर्वरा शक्ति बरकरार रहती है.